

[illegible]

三

ASHA ARCHIVES

2086

丁

॥ ॐ नदी ४ थो डि ४ मु की काखो ने पादं य नू य या दाय दू मे दं ग म्बो य वा ला
 वा र्थं य य यो ड म ल ४ म य र्थं द व ज न र्थं य ति य द म य र्थं ४ कि त व मी र्थं गो या अ
 कि त व मि र्थं भ व र्थं वि द ल का र्थं या दु धा न र्थं ४ क प्पु की का र्थं ना ॐ न धा नां वा ॥
 ॐ वृ ह स्य त अ ति अं त र्थं अ हो य म दि रा ति क ड म ड न व य दी द य द व स मृ त
 य जा य त त द स्या स द वि र्णं ध रि चि तं ॥ ॐ या व का न ४ ॐ धी ध न ॥ ॐ अ स्मा क
 मि त् ४ स मृ त य ध्वं य स्मा कं यो ॐ य व स्या ज य नु ॥ अ स्मा कं वी वा ड ल व रु व
 न्ना स्मां २ ॐ द वा अ व रु ता रु वं ॥ ॐ न मा व रु ण य या धि न यो धि न न्ना नां य

तथ न मा न मा रु व स्या रु लो ज ग तां य तथ न मा न मा नू द या ग ता यि न रु श नां य
 तथ न मा न म ४ मृ ता या रु लो व ना नां य तथ न म ४ ॐ स क य ३ ३ ति य थ म य क
 म का अ स्मा रु व ति स य धा मा रु ना नि व क म ड ल य न्ना वि र्णं ड व ना नि त दू
 ४ ॐ अ भो ज स्मा अ नू द ग व रु ४ स म ड ल ४ ॥ य धे न ४ नू द अ रि ता दि दू
 रि ता ४ मृ द ॥ भ वे षा ४ ॐ ॐ म रु ॥ ॐ ति स म ड ल द वा य न ४ ॥ ॥
 ॐ मं य धु क ल ग य मृ त ३ ३ या या मृ ती ध वी ग कि स रि ता य ॐ य मा स र्ने न म
 ४ ॥ य र्थ २ ॥ ॥ ध्या ने ॥ ॐ वृ ष सिं ह स्ति गं द र्वा दी न क न्द न्द स नि र्णं ॥ न क व

कंठिनर्गववकुर्कुर्जमहध्वनं॥ गिगूलाकधवेयवंववेकलधधविर्ली। वामा
 नृकुगतादवीद्विहुजाकलधधववा॥ रुमारुनगरुयांगी। ध्वताम्वनविह्व
 धधनमृतीध्वनध्वतामवेयाययधधनं॥ ध्वनयुष्यं॥ ॥ॐ आदिः
 ध्वकलधधमकात्वाविर्लीद्विद्वव॥ यूननृजोनिवर्कस्वसान॥ मरुयध्वकाव
 धवाययस्वतीयूनमोविर्लीतादयि॥ ॐ मम्मर्ग। गयमूनसवस्वतीमव
 द्धमर्मसवता॥ ययुद्धा। मूमवदिधधविर्लीतकयाजिकीथध्वन्यामस्वामया
 ॥ॐ सितासितसवितयगर्मगर्मतगायनायादिवमृत्यगनि॥ यवेतन्नीवि

नका २

सृजनिधीवासवेजनासाइमृतत्वर्कजना॥ ॐ यश्चनय॥ मवस्वतीमयियनित
 धागम॥ मवस्वतीयश्चधमादोशरवत्सविता॥ ॐ वनृणस्थारुमृतमसिव
 नृणस्थारुमृतनीलावनृणस्थारुमृतमदन्यामिवनृणस्थारुमृतमदनमसिव
 नृणस्थारुमृतमदनमासीद॥ ॐ वक्षयक्षानं॥ ॐ देविष्टु॥ ॐ नम॥ ॐ रुवा
 या॥ ॐ शम्भुकी॥ दिव्यवधु॥ ॐ श्रीध्वनं॥ ॥ आवाहनादि॥ ॥ मृक
 अथकलधधनविर्लीतमव्विविधविष्टुममु॥ ॥ अथकलधधनविष्टुममु॥
 विष्टुममु॥ विष्टुममु॥ दमासनं॥ ययुष्यं॥ ॥ॐ वाक्तामस॥ यितव॥ साम्याम

यूर्लसु० सृजंथामयेवा॥ गुमिन्यधस्तु अथुरुवर्मिं विष्णुधवाय ऊमानद्यसी
 दता॥ ॐ वृहस्यगं गृति॥ ॐ अन्नात्यविष्णुभात्रसैवन्नपाययिवत्कं र्णयय०
 धामैयजायति॥ मृगनसत्यमिन्द्रियं विद्यान० शुक्रमैधम० न्यस्यन्द्रियमि
 दयूया मृगंमधु॥ ॐ गन्नादवी॥ ॐ कयानधि॥ ॐ कंठुं कृध्वनकं तवया॥
 मया अथगंसा॥ समूषरि वजायथा॥ ॐ नाजस्यसूददा रुस० सामा॥ ॐ
 नकिपुत्रुय० जन्मदवानां विगमिष्ठात्राचनदिव० ॥ ॐ निआदित्या
 ॥ ॐ ॐ ॐ आदि दशला कयालस्य ॐ दमासनं नम० ॥ यूयै २॥ ॥

ॐ गगनमिन्दु ॥ ॐ अग्निमूर्द्धा ॥ ॐ यमनदलं गिरय नमायून गिन्दु नलं युध
भा अक्ष निरुत ॥ गन्धर्वो अक्ष वगनाम गृहा सुवा दध्वं वसवानि वगध्व ॥ ॐ य
नक्षत्री निमृति वाव वध्वपा ॥ ॐ वास्व विवृण्व ॥ तनु विश्यामायूधानमध्व
दधे तं पिठुमद्वि यस्तुत ॥ नमा हृत्येय दक्षकावा ॥ ॐ ॐ मभव नृणा ॥ ॐ न
ववाय वृहस्पतं त्वष्ट्रं जामात नदुता ॥ अवा एष्या वृणी मरु ॥ ॐ कविदं ग
यवमन्तार्यं वी विद्यथो दाक्ष नृपू र्वं वियूय ॥ ॐ रुद्रं वां रुद्रा हि राजना नि
थवरुयानमड किं यजन्ति ॥ ॐ तमीधमै ॥ ॐ गी वियदा विचक्रम विष्णुः

गोपाअदाय॥ अताधर्मोपिधावयन॥ ॐ वद्वलस्यन॥ ॥ॐ ति॥
 दि॥ ॥ॐ यश्चलाकयालस्य॥ दमासर्ननम॥ ॥ यूर्यं २॥ ॥ॐ गण
 नांवा॥ ॐ अम्बुअम्बिक॥ ॐ आनानियुहि॥ ॥ तनीहि वद्वव॥ सद्रुषिनीहि
 नूययाहिय॥ वायाअसिस्तवनमादयस्ययूयम्यातस्वकिरि॥ सदान
 ॥ ॐ दृर्तदृतयावान॥ यिवतवसावसायावान॥ यिवकानविदुस्यरुवि
 नसिस्वाहा॥ दि॥ ॥ यदि॥ ॥ यादि॥ ॥ विदि॥ ॥ दि॥ ॥ दि॥ ॥ स्वाहा॥ ॐ उ
 रायिवतमधिनाहन॥ मयचूर्ण॥ अविदियांरितुतिरि॥ ॥ॐ ति

यश्चलाकयाल॥ ॥ॐ यश्च वकुमदागिवाय॥ दमासर्ननम॥ ॥ यूर्यं २ ॥
 ॥ॐ सद्याजातायवमीतियरुमग्निदेवानामस्तुवत्युवाग्म॥ अस्यरुपति
 सृतस्यवाजिस्वाहा॥ रुविनदंरुदवा॥ ॐ वाममद्यसविनवाममू॥
 दिवदिववाममस्य॥ सार्वी॥ वामस्यरिद्वयस्यदवद्ववयाधियावा
 मरुत॥ ॥ॐ यातवृदगिवातनूनधावापायकालिनी॥ तयानरुन्वा
 सकमयागिनि॥ कालिनाकलीहि॥ ॐ यत्पूषंयदधू॥ कतिक्षयकल्यय
 न॥ ॥ स्वकिमस्यासीत्किंवाक्किमुद्रयादाउच्यत॥ ॐ तमी॥ ॥

[illegible]

योवाविष्णुसमनस्यमानो॥ ॐ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॐ सर्वानाम्मना ॥ ॐ
 वतासुमविलो न्याकर्त्त॥ ॐ ग्रेयवीथ्याधियारु ॥ ॐ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
 य(धदि)॥ ॥ सिद्धममृदु ॥ ॐ धीधत्त॥ ॥ ॐ धृवसि ॥ ॐ तज्जसि ॥ ॐ
 याः रुलिनी ॥ ॐ अन्नयतो ॥ ॐ नमः ॥ ॐ मनादूति ॥ यतिष्ठा ॥ ॥
 जायमानं ॥ ॐ उमावित्तैकपुत्रिकागवधुं धवाधिनार्थवृषरासनस्कं ॥ ॐ
 धूलरुसंवरुयाकमालं मुख्यं जयं वयमा मिनिर्त्तं ॥ अगगन्वादि ॥ ॥
 ॐ नत्तोषधीसकलतीर्थजलनयूधुं स्वकृणयल्लवसु ॥ ॐ शितयूथमालं ॥

कमपुल्लं॥ ॥सु॥॥ॐ यद्वाथानि श्रुमृत्तिमृद्विहाननिवासित॥ सृष्टि
 कलात्मकानित्यं तस्मै वदन्नमांशुन॥ ॥अक्षकलगायावद॥ॐ धनय
 नम॥ॐ य॥ॐ तमनदतय॥ॐ तद्विधाविधाविधस्य वृद्धताविधश्चि॥वि
 हायादधवयूनाविधक॥ नदीयवस्यसविदु॥ यववृत्ति॥ ॥ॐ धनयनम
 ॥ॐ ॐ दंविष्णु॥ ॥ॐ सोमाय॥ॐ ॐ नावतीधनेमतीहिरुतसुयव
 सिमनवद॥ स्या॥ अक्षनायादसीविष्णुवतदार्थेयुधिवीमहितामयूखे॥ स्वा
 हा॥ ॥ॐ अक्षो॥॥ॐ यवयूनादवाघातं यात्रीयतमध्वनकल्ययकोडि
 नी२

४२

वा५

यद्वनयनं माजिह्वनं॥ स्वर्गमावदतंदवीदूर्य॥ नागस्मोनिवोदिस्ययुजा
 स्मानिवादिष्टमग्नमथर्वयुधिवा॥ ॥ॐ अनिलाय॥ॐ विष्णुर्नर्कवी
 योनिववाचंय॥ याथिवानिविममवडा॥ सि॥ था॥ अक्षरायदुरुवसधसु
 विवकमाज्यु॥ धानुगथाविष्णुवत्वा॥ ॥ॐ अनिलाय॥ॐ दिवावाविष्णु
 उगवायुधियामहाविष्णुवत्रकनिहान॥ इराहिरुकावसुनायुपस्वा॥ य
 यद्वदक्षिणादागसयादिष्णुवत्वा॥ ॥ॐ यक्षमाय॥ॐ यतदिष्णुव
 नवीथेपमृ॥ गनरुमि॥ कथयानिनिष्ठा॥ गथायूषिष्णुविकमा॥ यधिदिय

किं वनानि विष्णु ॥ ॐ यथासाय ॥ ॐ विश्वानवायमसि ॥ ॐ ह्ययु कल
 मा वय ॥ ॥ यश्च गयसाधन विविध लिखित ॥ ॥ यीतवृ (धुन नवका) धूलिख
 ॥ लाजायुक्त यनी ॥ ॥ दधिदुग्ध चोक्तं यं (ममूर्गं दक्षि) (न नहु) यय ४ यधि
 ममाक्षयं धुनं चैवा लन नहु ॥ ॐ (मये) लिङ्ग मित्वा इ नं मुख्यं यथा राजनं
 वायव्य (ममूर्गं) स्थाप्य ॐ शान्तं हुक् (ममूर्गं) ॥ तामयागुक्तितामि (धूमि) ध
 थं दधियुक्ते ॥ दक्षो सननिधाय हु दध्याया हु यथं धुक् ॥ ॐ श्र
 यादि ॥ पुन नमस्को न ॥ न्यासादिकं नय ॥ ॥ तता वलिदयात् ॥ ॐ

ॐ धेमानो विष्णु याना लरुगति दीर्घे अगि रुख अगि सुल अगि रुग अ
 गि रुक् अगि रुक् अगि रुक् अगि रुक् अगि रुक् अगि रुक् अगि रुक् अगि रुक् अगि रुक्
 यथा ॥ मागध ४ यं धली कितव ४ श्रीवाग्दुग्ध अवाग्दुग्ध अवाग्दुग्ध अवाग्दुग्ध अवाग्दुग्ध
 तिमन्तु वलि न्यत्वा ॥ विसृज्यता ॥ ॥ धृत्वा ॥ ॐ दधिदमायति देवताये
 २ ॥ ॐ दधिकात्रा अका विषं जिष्णुं नद्यं वाजिन ॥ सूरिना मुखो कन्य
 ल आयु ॥ ॐ मिता विषत ॥ ॥ दक्षि ॥ ॐ (ममूर्गं) वक्ति देवताये २ ॥ ॐ ग
 यनी ॥ ॥ यधिमा ॥ ॐ श्री नं सामयवताये २ ॥ ॐ यय ४ धृथिया ॥ ॥

मीदममविदमग्रीधामथाविथत्वाद्यमोसिदिष्मयुनूयथाडनूयथत्वावून
 यरूयति॥यथगाममिभूवचमाहि॥सीदवत्तामविगाधययुवविधिधिता
 का॥ ॥यवाप्रियजमानराग॥ ॥तगागमयतिगवर्ज॥स्त्रानचदन
 सैद्वनयकायवीतयूयधूयदीयादि॥ ॥वद॥ॐ निवानामासिस्वधितिष्ठ
 यिताममरुअमुमामाहि॥सी॥निवरुयामायुधनाशाययजननायया
 गयायायनयजात्वायसूवीथोय॥ ॥जयमुति॥ॐ गमयतिगव
 यायसवैयाययभागी॥सर्वदहयविगायतत्वरूयायननम॥अरुगदी

दि॥ ॥गामृत्विजादियजमानयअरुगयदातर्थ॥ॐ वाचकं शुभ्रमिथापक
 शुभ्रमित्रकं शुभ्रमिष्टातकं शुभ्रमिनारिं शुभ्रमिमदकं शुभ्रमियायुकं
 शुभ्रमित्रनिगंशं शुभ्रमि॥ॐ मनरुआयायगांवाकआयायगांयागसुः
 आयायगांवद्रुआयायगा॥॥आगकआयायस॥गलकुर्वयदासुितग
 रुआयायगांनिष्ठायागांनलं शुद्धरुसमदाय॥ॐ यमधेयस्वधितुमेनय
 ॥हि॥सी॥ ॥अरुद्वी॥ॐ स्वमप्रेयुलि॥गधुमंयथायतिदार्थयअ
 गयालेगृधकलालेय॥ॐ तिर्यगवासाधनविधि॥ ॥ ० ॥ ॥

ॐ नमः

श्री नारायणाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ दि न अ व धु ॥

काथकु प्र न वा ॥

आभु जा न व द ध

दीम ॐ न म र्गि न व ध ॥

मणि क मा न प्र न वा ॥

अ ता द श्री ध र

अ न ग ॥ ७ ॥ न ग्म र्गि त्वा

अ न ल र्द ध अ र्म र्ग्या रा

वि धु न न न म र्म नू द

लो अ व द ल क श्मा म्मा र व ध

ग थ क थ वा

रु न म न गी वा न्धा आ न

ना ग न म्मा मु स थ

मा न्धु न व रु र्ग्या र्ग अ मि

क ल र्क क अ र्क क र्म क र्म

रु ति नि अ र्ग्या रा

म डि ध म्म दि न रु म्म गी र्मा

रु ग व र्गी को र्ग्या र्ग

अ नु लि ग ल अ र्म अ मि क

इ ल र्द व ल जा न व द ध

अ म र्म जा न व द ध

अ न ग ॥ ७ ॥ अ मि अ म्मा

अ न द मि र्म गी वा न्धा आ न

अ ता द अ म्मा क र्मा

अ र्ग्या ॐ ॥ ७ ॥ अ मि अ मि

अ र्ग्या ॐ ॥ ७ ॥ अ मि अ मि

अ र्ग्या ॐ ॥ ७ ॥ अ मि अ मि

अ र्ग्या ॐ ॥ ७ ॥ अ मि अ मि

अ र्ग्या ॐ ॥ ७ ॥ अ मि अ मि

अ र्ग्या ॐ ॥ ७ ॥ अ मि अ मि

अ र्ग्या ॐ ॥ ७ ॥ अ मि अ मि

अ र्ग्या ॐ ॥ ७ ॥ अ मि अ मि

अ र्ग्या ॐ ॥ ७ ॥ अ मि अ मि

अ र्ग्या ॐ ॥ ७ ॥ अ मि अ मि

अ र्ग्या ॐ ॥ ७ ॥ अ मि अ मि

अ र्ग्या ॐ ॥ ७ ॥ अ मि अ मि

वृद्धतिशया आकृतिश्च वम यशना ॥ वक्रायणी उरु ॥ उं वक्रयज्ञानी ॥ ॥
 मङ्गल्यत्री मङ्गल्यसु ॥ उं निधानामसि ॥ ॥ कोमारी लक्ष्मी ॥ उं यशया ॥
 ॥ ॥ वक्रायणी लक्ष्मी ॥ उं विष्णुप्रसाद ॥ ॥ वावाही लूसि कयि ॥ उं यश कृ
 भा ॥ ॥ ॥ वक्रायणी उरु ॥ उं ॥ वक्रयणी ॥ ॥ वामयणी लक्ष्मी ॥ उं यश
 वदमङ्गल्य ॥ ॥ महालक्ष्मी लक्ष्मी ॥ उं विष्णुप्रसाद ॥ ॥ निवर्णकि
 क्षया ॥ उं निधानामसि ॥ ॥ रुद्रवक्रयणी मङ्गल्य ॥ उं अमृत्याता ॥ ॥ रुद्रव
 क्रयणी ॥ उं अमृत्याता ॥ ॥ श्रीलक्ष्मी स्वसि ॥ अथ यथ ॥ उं श्रीप्रतलक्ष्मी ॥ ॥

श्रीकृष्ण स्वतन्त्र ॥ उं नीनयिवाणितिकृष्ण ॥ ॥ रुद्रवती धनिद ॥ उं अमृत
 मिक ॥ ॥ यश्वकृष्ण तद्विष्णुल ॥ यिनाय महालक्ष्मी मङ्गल्यती शव ॥ उं म
 आजाताया ॥ ॥ वक्रयणी उरु ॥ उं वक्रयणी मङ्गल्यती ॥ ॥ गङ्गादि
 उतिनिधनिवा ॥ उं ॥ मङ्गल्यती मङ्गल्यती ॥ ॥ कृष्ण स्वतन्त्र ॥ उं यश्वकृष्ण
 यथ ॥ ॥ यिनायकाया ॥ उं नमो गङ्गा गङ्गा ॥ ॥ नाग स्वतन्त्र ॥ उं नमो
 मङ्गल्यती ॥ ॥ रुद्रवती कानाद ॥ उं अमृत्याता मङ्गल्यती ॥ ॥ मङ्गल्यती मङ्गल्यती
 ॥ उं मङ्गल्यती मङ्गल्यती ॥ ॥ वक्रयणी मङ्गल्यती मङ्गल्यती ॥ उं अमृत्याता

॥ ॐ नमः ॥ ॥ यद्भवत्तु यद्भवत्तु ॥ ॐ नमः ॥ ॥ वसिष्ठाय
निनी नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॥ वसिष्ठाय नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॥
॥ ॥ स्ववचनं विष्णु ॥ ॐ नमः ॥ ॥ थसिमा निवा ॥ ॐ नमः ॥ ॥
नक्षत्रं मसि ॥ ॐ नमः ॥ ॥ थग कार्ति ॥ ॐ नमः ॥ ॥
॥ ॥ नाग मन्त्रि ॥ ॐ नमः ॥ ॥ थग कार्ति ॥ ॐ नमः ॥ ॥
भावकृत् ॥ ॥ ॐ नमः ॥ ॥ थग कार्ति ॥ ॐ नमः ॥ ॥
निवन्त्रा ॥ ॐ नमः ॥ ॥ थग कार्ति ॥ ॐ नमः ॥ ॥

नी ॥ ॐ नमः ॥ ॥ थग कार्ति ॥ ॐ नमः ॥ ॥
वायुद्वयं ॥ ॐ नमः ॥ ॥ थग कार्ति ॥ ॐ नमः ॥ ॥
यद्भवत्तु ॥ ॐ नमः ॥ ॥ थग कार्ति ॥ ॐ नमः ॥ ॥
॥ ॥ थग कार्ति ॥ ॐ नमः ॥ ॥ थग कार्ति ॥ ॐ नमः ॥ ॥
दिन ॥ ॥ थग कार्ति ॥ ॐ नमः ॥ ॥ थग कार्ति ॥ ॐ नमः ॥ ॥
॥ ॐ नमः ॥ ॥ थग कार्ति ॥ ॐ नमः ॥ ॥ थग कार्ति ॥ ॐ नमः ॥ ॥
॥ ॐ नमः ॥ ॥ थग कार्ति ॥ ॐ नमः ॥ ॥ थग कार्ति ॥ ॐ नमः ॥ ॥

ॐ॥ ॥नेष्टय वेष्टवी थाकरी॥ ॐ यन्मयवी॥ ॥वन्ग वन्माही थाता
॥ ॐ मम वन्ग॥ ॥वायव्य ॐ दायणी यंकलि॥ ॐ तव वायव्य दायणी॥
॥ ॥कवच वामपु यन्ता॥ ॐ कविदं गजयमन्ता॥ ॥ ॐ नमः कालि
वंकलि॥ ॐ तमी नमः॥ ॥कुमार यिकुत्रि स्रत॥ ॐ यदस्कन्दयु॥ ॥ग
॥ ॥थागिनी यंकलि स्रत॥ ॐ मन्मथ तर्पयत॥ ॥थागिनी यंकलि स्रत॥
ॐ वसुधैव कुटुम्बकम्॥ ॥द्वय वंकलि स्रत॥ ॐ यतयन्मायथि॥ ॥याताल
कुटि॥ ॐ मम वन्ग॥ ॥मन्मथ पुलः तल॥ ॐ यजयत नत्त॥ ॥स्र

मन्मथ॥ ॐ दायणी यिकुत्रि॥ ॥थानलख लक्ष्म्या यथुमा॥ ॐ दृष्टं दृष्ट
यावान॥ ॥वन्माय वि वृष्टिगया॥ ॐ दायणी यिकुत्रि॥ ॥थानलख
तिष्ठा आकृति विद्यः यवमय रूपा॥

कुटुम्बिकाया द्वावन्मथयथ॥ द्वावन्मन्मथ कलन लखनकाय॥ ॐ यवमय
त्वा॥ यवमन्मथ॥ ॐ यवमन्मथ॥ ॐ यवमन्मथ॥ ॐ यवमन्मथ॥
उक्तय॥ ॐ यवमन्मथ॥ ॥मन्मथयातय॥ ॐ यवमन्मथ॥ ॥यवमन्मथयातय
॥ ॐ यवमन्मथ॥ ॥मन्मथयातय॥ ॐ यवमन्मथ॥ ॥यवमन्मथयातय॥ ॐ

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

阿

निप्रवृत्तः॥

हिरादाहनि विभय ॥ १० ॥
वेद ॥ ३ ॥ हिरादाभववीदं
३ ॥ आद्यु मंथवाय्यदीन ॥
पुण्यभवपुरवदस्मात्ते
पुरीषवादिनः ॥ ह्यैकको
ने ॥ ॥ ॐ शुद्धावेतवाला
ह्यैकलिन्यादि ॥ ॥ ॐ आ
वत्त चन्द्र चैस् पमिभ्य
चदा कासुमेदिनी ॥ ना
वत्त चालिन्यादि च हि
राभव ॥ ॥ ह्यै ह्यै भवत्त
मदेवादेवाभ्यामनेना
चैरे ॥ ॥ द्याव च द्याव
ह्यै ह्यै नावत्त च हि
राभव ॥ ३ ॥

अष्टेत्तादि ॥ गोत्रनामकाय ॥ १ ॥ हप्रतिष्ठाकमेनि
कर्तुं पुष्पाभाजनीलमर्पयामि ॥ मिजया च कि
मिजकोलासतय ॥ नर्मदन ॥ ह्यै न ॥ चन्दन
पुष्प ॥ धूप ॥ दीप ॥ वैलाजुलनावमिजया च
किथयमासताय ॥ ॥ धिरहाले ॥ व्राह्मणा
पूजा ॥ ॥ २ ॥ क्षिराग ॥

श्रीचक्रनमिदं प्रार्थना गुरुयाधम
 पाठिधार्मिका धर्मदामा॥
 ह्रीं ह्रीं आ ह्रीं
 नानायाधः ॐ ह्रीं विष्णुः
 सदाशिवः नमः शक्तिवायः
 कप्रिनायः गच्छेत्
 मधिकमानः ॐ स भवेन्नृप
 धनैश्च यनः यज्ञागमः
 प्रसिद्धकलावः श्रीविद्यया
 मानसं नवः अर्चयेत्
 मानसं नवः दिनश्च वधुः
 गच्छेत् गच्छेत् नो
 क्रमानः यज्ञवाधः
 शिवन्नानायाधः सदाशक्ति
 प्रार्थना किमर्थं यनः ॐ नमो वधुः
 मीननाथः यज्ञागमः
 श्रीमन्नयाधनः नमः शक्तिवायः
 ह्रीं ह्रीं नमो मुनीनयाधायः
 कामागिः नमः शक्ति
 प्रश्नानिः अर्चयेत् ॥ १॥

वल्लभः श्रीशक्ति
 शक्तिर्गोमः सरस्वती
 श्रमजितः शश्वत्कुम्भ
 शिवमूलः अर्चयेत्
 यगुयतिः यार्चयेत्
 मुक्षुधनीः समस्तधनं
 श्रीगुनानायाधः ॐ ह्रीं विष्णुः
 काथलागः विष्णुनारायणसि
 यगलठः उद्धृष्टवाधः
 यक्षनीः ॐ स भवेन्नृप
 धर्मधनः शिवानामासिः समस्तधनं
 गच्छेत् गच्छेत् नो
 काथलागः जागवदमः
 कुम्भः नमो वक्रधनं
 नमः अर्चयेत्
 नमो वधुः यार्चयेत्
 ॐ ह्रीं ह्रीं नमो वधुः
 नानायाधः ॐ ह्रीं विष्णुः
 रुतिनीः अर्चयेत्
 दानः दानाधनीः

रुद्रमन्त्रं गीतान्धासान
 दासादयः विष्णो ननाटमसि
 रगवगीः जागवदसं
 दुरुतन्त्रीः श्रीशङ्खलन्त्रीः
 दुरुमन्त्रः विष्णुगद्यद्रुद्रः
 धर्मस्वनिर्देश्यगदुरुया॥

८१

अस्माद्यवगधद्वो दधिवर्धनीरु
 लो॥ क्रियायुक्तेषु कलशमालयध
 विधानग॥ मनुकविशेषितयक्ष्ण
 विवाहदश॥ सिद्धिने जिगयापन
 यनं॥ गोमा॥ सद्यन्तु कानयन॥
 उद्भूतभवन्त॥ कोषगष्ट अष्टराण्य
 मध्यामा॥ अश्विदादशगच्छ गद्व
 गङ्गेभयनो॥ ॥ कथाकायध
 क॥ क॥ अश्विर्वयविशामि त्वं वज्रव
 दयानग॥ विरुकायदि गोधमयः क॥
 मर्यादयामर्ह॥ यनाः भवदिनाय
 दोर्केश्वरवर्धनी॥ धवदानुमयाग
 कनवीनचदन्व॥ ॥ धनार्क विधमासा
 नक्षत्रमारा॥ कफास्मनी॥ नृगचनाना
 र्वेवदभक्ष॥ समिधश्चुगा॥
 ॥

वि

लं नमः श्रीवन्म॥ ॥ युवसमजामासा॥ सूर्योर्ध्वदत्ता॥ क॥ अत्रिकमेक्यो
 ता॥ या नृसर्वसिद्धि॥ नागलीन्यार्मकायथं॥ ॥ ॐ कावदशकमसामान्यार्धया
 लसाधयत्वा॥ गङ्गलनात्मानं सिद्धि॥ निलकं विष्णय॥ यथार्थ॥ ॥ युग्मक॥ माः
 दाग॥ ॐ मर्हः ॐ द्यो वज्ररुसथा॥ उगीगमैयकुरु॥ रुद्रुवायानं यास्मान्दक्षिणं
 प्रवर्गद्विषा॥ ॥ ज्ञानवप्रमृहीत्वा॥ तस्मिन्पूजयन्ता॥ यामरुक्मनिधाय॥ ॐः
 ॐ द्यायनम॥ ॐ वज्ररुकाय॥ ॐ सुनाधियतय॥ वद॥ ॐ गतावमिन्द॥

उदकवलयवर्णनागलययादि॥ उँ गलनां त्वागलयति ॥ रुवामरुयियानां त्वायि
 ययति ॥ रुवामरुनिधिनां त्वा निधियति ॥ रुवामरुवशाममा ॥ आरुमजानिगरु
 धमात्तमजानिगरुध्वी ॥ गलयति वलि ॥ ॥ उँ नभा वस्तुभयथा धिनन्नानां यत
 थनमानभा रुवस्य रुह्ये अगतां यत थनमानभा नूदायागता विनक्षुणानां यत थ
 नमानम ॥ सुगाया रुह्ये वनानां यत थनमानम ॥ ॥ रुँ यवलि ॥ ॥ उँ जातवद
 संसृतवामसां ममनाति यता निदहाति वद ॥ सन ४ यविषयति दूर्गना निविः

ध्वनाथवसिर्धुं द्रविताह्यमि ॥ ॥ दूर्गना वलि ॥ ॥ धूयदीय ॥ जाय ॥ रुँ ४ ॥
 उँ गलध्वन ४ कूमानयक्षुं ॥ गथागिनी गल ४ ॥ रुँ ववी यक्षनाम ध्वयलरु
 नयहाति च ॥ गृक्षु वलियूजाभा मूस्मिन् यरु वि ॥ गयत ४ ॥ रुँ वनु विद्युसंघागा
 नययक्षु मभयिगात् ॥ ॥ गृगध्वदि ॥ वलिविसर्जन ॥ ॥ लाजा विक्षयन ॥
 उँ लं यविषयामुखा नृ ४ ॥ धूधी गिर ४ ॥ नक्षाताकमूतसना ॥ ॥ गायत्रीम
 नृ ४ ॥ धूनिरीक्ष ॥ ॥ यविसमूरुने ॥ उँ यद्ववायवरु रुँ दवाँ ध्रुमावयं

धम्ममसूना धम्म यत्तु न कल्पंतां ॥ ॥ कृष्णसर्पः ॐ द वस्यत्वा स विदुः ॥ य स व
 धिना त्रौ दूत्यां युष्मा ह स्मा र्था ॥ ॥ य म्म लिखत् ॥ ॐ हि न य्म ग के ॥ स म व रु ता
 (गुरु तस्य जात ॥ य ति न क ना सी गु ॥ स दा धा न यु धि वी द्या म न मां क र्मा ध वा य द
 विद्या वि ध म ॥ हि न य्म स यि स क ले नि धा या ॐ ता ५ स वि दु व न य्म स वि गः
 मा रुं दृ ण म म ति वि ध क ना म ॥ य म स्य क (५) अ दू दू ल्य यी ना ॥ स रु य ध मां
 य य सा म ही क्षी ॥ ॥ सु व धु न जा त य म्म य ध न र्ना नि धा या ॐ य द्वा न न य द्वा
 उ दू य द्वा दि य द्वा स र व ॥ त न्म रु ज सि य द्वा दि त न सी र्वा ल रा म्म रु ॥ ॥

दू र्थ नि धा या ॐ श्री ध त ल द्वा य त्वा म हा ना य या (५) न दू ग ति दू य म धि नोः
 द्या रुं ॥ ॐ धू नि धा ण म म्म ॐ धा ण स व ले क म्म ॐ धा ण ॥ ॥ कृष्णसर्पः ॐ न
 आ सि धु क म स्य मृ त मा सि धो म ना मा सि ॥ यि य न्ध वा ना म ना धू धू द व य ज न
 म सि ॥ ॥ हि म्म र्मी क धु व द्वा न ॥ ॐ ल्व य वि दू द्या ॥ ॥ वा मी ध यी दू ज नी ॥
 ॐ य क न म न सा व य द व स्य स वि दुः ॥ स व ॥ स य म्म य ग द्वा ॥ ॥ ल द्वा मा वा
 द्वा स य नी ॥ ॐ हि न य्म व धू र्ना रु वि ली सु व धु न जा त य ज च द्वा हि न य्म यी ल द्वा
 जा त व द्वा म मा व रु ॥ तां र्मा व रु जा त व द्वा ल द्वा म ल्वा ग मि नी ॥ ॥

गमूक्तिनामियमसजातायमसजातानिचखानाकृत्यांकिनामि॥ ॥ वलि॥ ॐ
 धवाचदधिवकायथमायेशारिमक॥ गुरुं धमचोअमूर्यमचोअयादुधान्याध
 नाची४यनासुव॥ ॥ मवतिलाकतेनकवादाकृतिगयचवृत्तन॥ ॐ कवादा
 नयस्वाहा॥ ३॥ ॐ कथादमप्रियहिले॥ मिद्वयमवाअंगकद्वियवाह॥ अमि
 यविस्वयवहिक्रियता॥ ॥ डयस्योर्न॥ ॐ ॐ देवायमितराजातवदादवयो
 रुच्यवरुदुयजानन॥ ॥ न्यास॥ ॐ ब्राह्मदयायनम॥ ॐ त्रिलोचनसस्वाहा॥ ॐ
 नूनिखायेवषट्॥ ॐ अंकववायेदू॥ ॐ आननगुगयायवीषट्॥ ॐ व४ अमुकयह

५२

शा ॥ अमुं मुख्यकर्णं ॥ डैवः अमुं यरुट् ॥ अमुं परमं नका ॥ ॐ वै कक्वाय
द्वं ॥ कवचनाकगुच्छनं ॥ ॥ वक्रिमायगी ॥ ॐ वै धनवा विप्रहं अनन्तादिता
यधीमर्हं । तन्नावक्रिः पचादयात् ॥ ॥ धनमुदाया मृतीकृत्य ॥ ॐ अग्नि
सृष्टियवमानः याश्च अन्यः युवाहितं ॥ तमीमहं महामयं ॥ अग्निन्यासः ॥ रु
तजाऽववेद्यवद्यातिवकीकृत्यानलगत्य स्वात्मानं विश्रुमूर्तिं ध्यात्वा ॥ ध्यात्वा ल
क्ष्मीविचित्रयत् ॥ ॥ ततो अग्निं गृहीत्वा ॥ ॐ अन्व निबूषसा मयमद्रधन्वरा
नियथमाजानेवदा ॥ अनुसूयस्य यूगचक्राग्निन्ननुधावापृथिवी आनर्ग

था॥ गिरिपतिं कृत्वा ॥ ॥ यजमानस्य यथाकार्यमयदं ॥ अग्निस्त्वायनसमूहं
समु॥ ॐ मयि पृच्छाम्य (यज्मि ७) प्रायस्यावायस्य ज्ञात्वायसूवीयौ य॥ मां मु
दवताः सचका ॥ ॥ स्वस्ति स्वाहा ॥ वाक् (यज्मि ७) वायुर्नया ० ता ॥ ॐ स्वस्ति नामी
मीतति ॥ ॥ ॐ नमो नानि यद्वाय ॥ ॐ ममाग्निं वमं ॥ ॥ दद्यामि सोमं स्वाया
जामृते नानुवर्त्ता ॥ ॥ दद्याच्चरीथावयूयं रुद्रा ॥ ॥ रुद्रयक्तं नानुदवाः ॥ मदनु ॥ अग्नि
यूजनं ॥ ॐ पृष्टादिविपृष्टा अग्निः ॥ पृथिव्यां पृष्टा विष्वाडाषधीना विवशः ॥ वेष्म
नयः ॥ सरुसा पृष्टा अग्निः ॥ सनादिवास विषसा तुनकं ॥ ॥ तता अक्षवागर्न

॥ पूर्वोदिकं ॥ ॐ मृष्वदाय ॐ दमासुर्न नमः ॥ ॐ यज्ञवेदाय ॐ दमासुर्न नमः ॥ ॐ साम
वेदाय ॐ दमासुर्न नमः ॥ ॐ अश्ववेदाय ॐ दमासुर्न नमः ॥ ॐ अग्निमीळयू
वाहितं यज्ञस्य देवमृष्यजं ॥ ॥ आगारं यज्ञधाम ॥ ॥ पूर्वोदिकं वाटनी ॥ ॥ ॐ
ॐ भत्वा ज्ञात्वा वायवस्तु देवा वः सविता याये यदु ॥ ॥ अष्टगमाय कर्म ॥ ॥ आया
यध्वमग्न्या ॐ द्याय रुमं युजावती वल्मीवा अयश्चा मावस्तु न ॐ ॥ तमाद्यं
॥ साधुर्वो अग्निं न (मयतो स्यात्) वद्वी यजमानस्य यज्ञं ग्राहि ॥ दक्षिणं अक्ष
वाटनी ॥ ॥ ॐ अग्न आयाहि वीर्यं गृह्णन्तं रुद्रा दद्यात् ॥ निहाता स त्सिः
न

६

वसिष्ठा यथि मरुत वातनी ॥ ॐ नमो दधी नरि ह्यय आवा रु व नु यी तय ॥ १ ॥
था न रि ध व नु न ॥ ॐ नमो दधी नरि ह्यय आवा रु व नु यी तय ॥ १ ॥
देवताय गायत्री च न्य स नमः ॥ ॐ य इ वे दाय सा व द्वा ज (ग) गाय व द्वा द व ता य
विष्णु च न्य स नमः ॥ ॐ साम वे दाय का ध्य य (ग) गाय नू द दे व ता य ज ग ती च न्य
स ॥ ॐ अथ वे दाय वे दान स्या (ग) गाय च न्य दे व ता य अ नू द च न्य स ॥ २ ॥
ॐ च न्य दे व ता य व द्वा द स्या य नै वा व ता स ना य स वा धि य त य ॥ ॐ अ (ग) य ग कि
रु सा य च न्य ग स ना य त अ धि य त य ॥ ॐ य मा य द धु रु सा य म हि वा स ॥

युता

न ३

वाकसा धियतय १

नाय स वा धि य त य ॥ ॐ नमो दधी नरि ह्यय आवा रु व नु यी तय ॥ १ ॥
या ग रु सा य म क ला स ना य ज ला धि य त य ॥ ॐ वा य व द्वा द रु सा य मृ ग वा
रु ना य य व ना धि य त य ॥ ॐ कृ व वा य ग दा रु सा य अ धि वा रु ना य ध ना धि य त
य ॥ ॐ श्री ग न ना य रि गु ल रु सा य वृ ष रा स ना य स च रु ना धि य त य ॥ ॐ
अ ध म च रु सा य कृ मी स ना य या ना ला धि य त य ॥ ॐ दु द्वा य क म पु ल
रु सा य रु सा स ना य स च न्ना धि य त य ॥ ॐ स न ना य ॥ ॐ म र्वा य ॥ ॐ या
ना ला य ॥ ॥ द स मि ध र्मा ॥ न कं ॐ का व ग स्वा हा ॥ न कं रु र्मी रु रु